॥ श्री राणी सती जी की आरती ॥

जय राणि सती माता, जय राणि सती माता ।
कलियुग में अवतारी, जन जन सुख दाता, जय राणि सती ..

मांग सिन्दूर विराजत-टीको मन मोहे,
गल मोतियन की माला-नथ बेसर सोहे, जय राणि सती ..

लाल चुनरिया चमके-छवि लागे प्यारी...
चुडला दम दम दमके भक्तन हितकारी, जय राणि सती...

नारायणि, ब्रह्माणी-पार्वती, सीता,
राणी सती कोई कहता-तू भगवद्‌गीता, जय राणि सती...

तनधन पति कहाये-गुरसामल जाई,
सत की ज्योत अनूठी-सेवक सुखदाई, जय राणि सती...

झुंझुनू में है वास तिहारो-शोभा अति न्यारी,
धूप-दीप, तुलसी से-पुजे नर नारी, जय राणि सती...

भादो बदी अमावस-मेला खूब भरे,
दूर दूर के यात्री-तुमको नमन करे, जय राणि सती...

पुत्र, पौत्र, सुख, सम्पति-अन, धन की दाता,
रोग विनाश करे जो द्वार तेरे आता, जय राणि सती...

रण चण्डी का रूप तिहारा-ममता मई माता,
जिस पर कृपा तुम्हारी-सब वैभव पाता, जय राणि सती...

राणि सती जी की आरती-जो कोई नर गावे,
रमाकांत कहे निश्चय-वांछित फल पावे, जय राणि सती...

॥ श्री गणेश जी की आरती ॥

जै गणेश जै गणेश, जै गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा ।

एक दन्त दयावन्त, चार भुजा धारी ।
मस्तक पर सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी ॥
जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा ।

हार चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा ।
लड्डूअन का भोग लागे सन्त करें सेवा ॥
जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा ।

अन्धन को आँख देते कोढिन को काया ।
बाँझन को पुत्र देते निर्धन को माया ॥
जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा ।

दीनन की लाज राखो, शंभु पुत्र वारी ।
मनोरथ को पूरा करो, जाये बलिहारी ॥
जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा ।

जय दादी की

॥ श्री कृष्णजी की आरती ॥

॥ आरती युगल किशोर की कीजै ॥

आरती युगल किशोर की कीजै । तन मन धन न्योछावर कीजै ॥
रवि शशि कोटि बदन की शोभा । ताहि निरख मेरो मन लोभा ॥
गौर श्याम-मुख निरखत रीझै । प्रभु को रूप नयन भर पीजै ॥
कंचन थार कपूर की बाती । हरि आए निर्मल भई छाती ॥
फूलन की सेज फूलन की माला । रत्न सिहांसन बैठे नन्दलाला ।
मोर मुकुट कर मुरली सोहे । कुंज बिहारी गिरिवर धारी ॥
श्री पुरूषोत्तम गिरिवर धारी । आरती करत सकल ब्रज नारी ॥
नंदनदन वृषभानु किशोरी । परमानन्द स्वामि अविचल जोरी ॥

॥ अम्बे तू है जगदम्बे ॥

अम्बे तू जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्परवाली ।
तेरे ही गुण गायें भारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती ॥
तेरे जगत के भक्त जनन पर, भीड पडी है भारी ।
दानव दल पर टूट पडों माँ, करके सिंह सवारी ।
सौ- सौ सिंहो सी तू बलशाली, हे देश भुजाओं वाली-
दुष्टों को तू ही तो सँहारती - ओ मैया ... हम सब ० ॥
माँ बेटे का है इस जग में, बडा ही निर्मल नाता ।
पूत कपूत सुने है पर ना, माता सुनी कुमाता ।
सब पे अमृत बरसाने वाली, सबको हरपाने वाली -
नैया भँवर से उबारती - ओ मैया... हम सब ० ॥
नहीं मांगते धन और दौलत, ना चाँदी ना सोना ।
हम तो माँगे माँ तेरे मन में, एक छोटा सा कोना ।
सबपे करूणा बरसाने वाली, विपदा - मिटाने वाली-
सतियों के सत् को संवारती - ओ मैया... हम सब ० ॥

॥ आरती श्रीकृष्णजी की ॥

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला, यशुमति के हितकारी ।
हर्षित महतारी रूप निहारी, मोहन-मदन मुरारी ॥१॥
कंसा सुर जाना अति भय माना, पुतना बेगि पठाइ ।
सो मन मुसुकाई हर्षित घाई, गई जहाँ यदुराई ॥२॥
तेहि जाई उठाई ह्रदय लगाई, पयोधर मुखमें दीन्हे ।
तब कृष्ण कन्हाई मन मुसुकाई, प्राण तासु हरि लीन्हे ॥३॥
जब इन्द्र रिसाये मेघ बुलाये, वशीकरण ब्रज सारी ।
गौवन हितकारी मुनि मनहारी, नखपर गिरिवरधारी ॥४॥
कंसासुर मारे अति हैकारो, वत्सासुर सँहारे ।
बक्कासुर आयो बहुत डरायो, ताकर वदन विडारे ॥५॥
अति दीन जानि प्रभु चक्रपाणि, ताहि दीन निज लोका ।
ब्रह्मासुर राई अति सुख पाई, मगन हुए गये शोका ॥६॥
यह छन्द अनुपा है रस रूपा, जो नर याको गावै ।
तेहि सम नहि कोई त्रिभुवन माही, मनवांछित फल पावै ॥७॥

दोहा - नन्द यशोदा तप कियो, मोहन सौ मन लाय ।
तासों हरि तिन्ह सुख दियो, बाल - भाव दिखलाय ॥

श्रीकृष्ण - जन्मोत्सव गायन

नन्द - घर आनन्द भयो, जय कन्हैया-लालकी ।
हाथी दीन्हे घोडा दीन्हे, और दीन्ही पालकी । नन्द - घर . ॥१॥

रत्न दीन्हे, हार दीन्हे, गऊ व्याई हाल की ।
कंठा दीये कठुला दिये, दीन्हीं मुक्ता माल की । नन्द - घर . ॥२॥

कड़े दीये छडे दीये, बिन्दी दीन्हीं भाल की ।
सुरमा दीन्हों, दर्पण दीन्हों, दीन्हीं कंघी बालकी । नन्द - घर . ॥३॥

जय दादी की

॥ पित्तरदेव की स्तुति ॥

जय जय पित्तरजी महाराज, मैं शरण पड्यो हूँ थारी जय ।
जय जय पित्तराणि महाराज, मैं शरण पड्यो हूँ थारी जय ।
आप ही रक्षक, आपही दाता, आपही खेवनहारे ।
मै मुरख कुछ नहिं जानुं, आप ही हो रखवारे ॥१॥ जय०

आप खडे है हरदम हर घडी, करने मेरी रखवारी ।
हम सब जन है शरण आपकी, है ये अरज गुजारी ॥२॥ जय०
देस और परदेस सब जगह, आप ही करो सहाई ।
काम पडे पर नाम आपको, लगे बहुत सुखदाई ॥३॥ जय०

मै भी आयो शरण आपकी, आपने सहित परिवार ।
रक्षा करो आपही सबकी, रटूं मैं बार-बार ॥४॥ जय०

चौदस ने थारी रात जगाता मावस धोक लगातां ।
थारी सेवा करके देवा कुल रो मान बढाव वा ॥५॥ जय०

॥ जय दादी की ॥
॥ जय दादी की ॥

जय दादी की

आरती श्री रामायणजी की

आरती श्री रामायण जी की । कीरती कलित ललित सिय पी की ।।
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद । बालमीक बिग्यान बिसारद ।।
सुक सनकादिक सेष अरू सारद । बरनि पवन सुत कीरति नीकी ।।१।।
गावत वेद पुराण अष्ट दस । छओ शास्त्र सब ग्रंथन को रस ।।
मुनि जन घन संतन को सरबस । सार अंस संम्मत सबही की ।।२।।
गावत संतत संभु भवानी । अरू घटसंभव मुनि बिग्यानी ।।
व्यास अदि कविबर्ज बरबानी । कागभुसंडी गरूड के ही की ।।३।।
कलिमल हरनि विषय रस फीकी । सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की ।।
दलन रोग भव मूरि अमि की । तात मात सब विधि तुलसी की ।।४।।

आरती श्रीरामजी की

जय जानकीनाथा प्रभु जय श्री रघुनाथा ।
दोऊ कर जोरे विनउ प्रभु सुनिये बाता ।।
तुम रघुनाथ हमारे प्रान, पिता-माता ।
तुम ही सज्जन संगी, भक्ति मुक्ति दाता ।।
लख्व चौरासी फंद छुडावो मेटो यम त्रासा ।
निस दिन प्रभु मोहे रख्यियो अपने ही पासा ।।
राम लक्ष्मण भरत शत्रूघन संग चारो भैया ।
जगमग ज्योत विराजत शोभा अति लहिया ।।
हनुमत नांद बजावत, नेवर झमकाता ।
स्वर्णथाल कर आरती, करत कौसल्या माता ।।
सुमग मुकुट सिर, घनु सर कर सोमा भारी ।
मनीराम दर्शन को, पल-पल बलहारी ।।

श्री रामावतार पाठ

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रुप बिचारी ।।
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुजचारी ।
भूषण बनमाला नयन विशाला शोभासिंधु खरारी ।।
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरि केहि बिधि करौं अनंता ।
माया गुण ज्ञानातीत अमाना बेद पुराण भनंता ।।
करुणा सुखसागर सब गुण आगर जेहि गावंहि श्रुति संता ।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ।।
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहे ।
मम उर सो वासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ।।
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ।।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रुपा ।
कीजै शिशुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ।।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ।।

श्री रामचन्द्रजी की स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन हरण भवभय दारुणम् ।
नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम् ।।
कंदर्प अगणित अमित छवि नवनील नीरज सुन्दरम् ।
पटपीत मानहुतड़ित रुचिसुचि नौमिजनक सुतारवम् ।।
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्दकन्द कौशलचन्द दशरथ नन्दनम् ।।
शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंगविभूषणम् ।
आजानुभुज सर चाप धर संग्राम जित खरदूषणम् ।।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनिमन रंजनम् ।
मम हृदय कंजनिवास कुरु कामादि खलदल गंजनम् ।।
मनजाहि रांच्यो मिलहि सोवर सहज सुन्दर सांवरो ।
करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ।।

एहिभांति गौरि अशीषसुनसियसहितहियहर्षित अली ।
तुलसी भवानी पूजि पुनि पुनि मुदित मनमंदिर चली ॥
जानि गौरि अनुकूल,सिय हिय हर्ष न जात कहि ।
मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे ॥

आदौ रामतपो वनादि गमनं, हत्वा मृगं कांचनम्
वैदेही हरणं जटायु मरणं, सुग्रीव सम्भाषणम् ।
बालीनिर्दलनं समुद्रतरणं, लंकापुरी दाहनम्
पश्चाद् रावण-कुम्भकर्ण हननं, एतद्धि रामायणम् ॥

॥ सियावर रामचन्द्र की जय ॥ पवनसुत हनुमान की जय ॥

॥ बजरंगबली की आरती ॥

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ।
जाके बल से गिरिवर काँपे, रोग दोष जाके निकट न झांके ॥
अंजनी पुत्र महा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई ।
दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये ॥
लंकासी कोट समुद्र सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई ।
लंका जारि असुर सब मारे, रामचंद्रजी के काज संवारे ॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े धरणी पर, लाय संजीवनी प्राण उबारे ।
पैठी पाताल तोरि यम कातर, अहि रावण की भुजा उखारे ॥
बाएँ भुजा सब असुर संहारे, दाहिनी भुजा सब सन्त उबारे ।
सुर-नर-मुनि जन आरती उतारे, जैं जैं जै हनुमान उचारे ॥
कंचन थाल कपूर की बाती, आरती करत अन्जनी माई ॥
जो हनुमान जी कि आरती गावै, बसि बैकुंठ अमरपद पावै ।
लंका विध्वंस किये रघु राई, तुलसीदास स्वामी कीरति गाई ॥

श्री हनुमानजी के लिए नमन

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वा नरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥

॥ सियावर रामचन्द्र की जय ॥ पवनसुत हनुमान की जय ॥

॥ श्री सत्यनारायणजी की आरती ॥

ॐ जय लक्ष्मीरमणा - स्वामी श्री लक्ष्मीरमणा ।
सत्यनारायण स्वामी - सत्यनारायण स्वामी, जन पातक हरणा ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥
रत्न जटित सिंहासन अद्‌भुत छवि राजै - स्वामी अद्‌भुत छवि राजै ।
नारद करत निरंतर - नारद करत निरंतर, घंटा ध्वनि बाजै ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥ १॥
प्रकट भये कलिकारण द्विज को दरश दियो - स्वामी द्विज को दरश दियो
बूढो ब्राह्मण बनकर - बूढो ब्राह्मण बनकर, कंचन महल कियो ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥ २॥
दुर्बल भील कठारु जिन पर कृपा करी - स्वामी जिन पर कृपा करी
चन्द्र चूड़ एक राजा - चन्द्र चूड़ एक राजा,जिनकी विपत्ति हरी ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥ ३॥
वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी - स्वामी श्रद्धा तज दीनी
सो फलभोग्यो प्रभुजी - सो फल भोग्यो प्रभुजी,फिर अस्तुति कीनी ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥ ४॥
भाव भक्ति के कारण छिन छिन रुप धरो - स्वामी पल पल रुप धरो
श्रद्धा धारण कीनि - श्रद्धा धारण कीनि, तिनको काज सरयो ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥ ५॥
ग्वाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी - स्वामी वन में भक्ति करी
मन वांच्छित फल दीन्यो - मन ईच्छा फल दीन्यो, दीन दयाल हरी ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥ ६॥
चढत प्रसाद सवायो कदवी फल मेवा - स्वामी कदवी फल मेवा
धूप दीप तुलसी से - धूप दीप तुलसी से, राजी सत देवा ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥ ७॥
श्री सत्यनारायण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे-स्वामी जो भक्ति से गावे
भणत शिवानन्द स्वामी - मनरटत भोलानन्दस्वामी, सुख संपत्ति पावे ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥ ८॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा, स्वामी जय श्री लक्ष्मीरमणा ।
सत्यनारायण स्वामी, सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा ॥
ॐ जय लक्ष्मीरमणा ॥

बोलो श्री सत्यनारायण भगवान की जय । परमब्रह्म परमात्मा की जय ।
अटल छत्र की जय ।

सेवन्तिका वकुल चंपक पाटलाब्जै पुन्नागजातिकरवीर रसाल पुष्पैः ।
विल्वप्रवाल तुलसी दल मालतीभिस्त्वाम् पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद ।।

स्तुतिः कस्तूरी तिलकं ललाटपटले वक्षस्थले कौस्तुभं
नासाग्रेवरमौक्तिकं करतले वेणुं करे कंकणम् ।
सर्वांगे हरिचंदन सुललितं कंठेचमुक्तावलिं
गोपस्त्री परिवेष्टितो विजयते गोपालचूड़ामणिः ।।

फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं,
श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरंसुंदरम् ।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं,
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषं भजे ।।

सशंख चक्रं सकीरीटकुण्डलं स पीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् ।
स हारवक्षस्थलकौस्तुभश्रियम् नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ।।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं सुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्व लोकैक नाथम् ।।

हे रामा पुरुषोत्तमा नर हरे नारायणकेशव
गोविन्द गरुड़ध्वज गुणनिधे दामोदर माधव ।
हे कृष्ण कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते
वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहिमाम् ।।

आदौ देवकी देवगर्भ जननंगोपीगृहे वर्धनम्
माया पूतनजीवताप हरणं गोवर्धनोदारणम् ।
कंसच्छेदन कौरवादि हननं कुंन्ती सुतापालनम्
एतत् श्रीमद्भागवत् पुराण कथितं श्रीकृष्ण लीलामृतम् ।।

यं शैवा समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धाबुद्ध इति प्रमाण पटवः करतेति नैयायिकाः ।
अर्हन्नित्यऽथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः
सोऽयं वो विदधातु वांच्छित फलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्चसखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्याद्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं ममदेव देव ।।

गुरुंर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः । गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

बोलो श्री सत्यनारायण भगवान की जय । परमब्रह्म परमात्मा की जय । अटल छत्र की जय ।।

॥ श्री दुर्गाजी की आरती ॥

ॐ जय अंबे गौरी, मैया जय मंगलमूर्त्ती ।
थाँ को निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥
मांग सिंदूर विराजत, टीको मृग मदको ।
उज्वल से दोऊ नयना, चन्द्रवदन नीको ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥१॥
कनक समान कलेवर, रक्तांबर राजे ।
रक्त पुष्प गलेमाला, कंठनपर साजे ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥२॥
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ।
सुरनर मुनिजन सेवत, तिनके दुःख हारि ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥३॥
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत समज्योती ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥४॥
शुम्भनिशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नयना, निशदिन मदमाती ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥५॥
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे ।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भय हीन करे ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥६॥
ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी ।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥७॥
चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरुं ।
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरुं ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥८॥
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पती करता ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥९॥
भुजा चारि अति शोभित, खड्ग खप्र धारी ।
मनवांछित फल पावत, सेवत नरनारी ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥१०॥
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।
श्रीमाल केतु में राजत, कोटि रतन ज्योती ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥११॥
श्री अंबेजी की आरती, जो कोई नर गावे ।
भणत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पत्ती पावे ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥
ॐ जय अंबे गौरी, मैया जय मंगलमूर्त्ती,
मैया जय आनंद करणी, मैया जय संकट हरणी,
मैया जय रिद्ध सिद्ध करणी, मैया जय दुःखदारिद हरणी ।
थाँ को निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ ॐ जय अंबे गौरी ॥

सेवन्तिका वकुल चंपक पाटलाब्जै पुंन्नागजातिकरवीर रसाल पुष्पैः ।
विल्वप्रवाल तुलसी दल मालतीभिस्त्वाम् पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद ॥

स्तुतिः शुक्लां ब्रह्म विचार सार परमा माद्यां जगद् व्यापिनीम्
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्पाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्
वन्देतां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥

या कुन्देन्दुतुषारहार धवला या शुभ्र वस्त्रावृता
या वीणावर दण्डमण्डितकरा या श्वेत पद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशंकर प्रभितिभिर्देवैः सदावन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निशेष जाड्यापहाम् ॥

या देवी सर्वभूतेषु मातृरुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्चसखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्याद्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं ममदेव देव ॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे श्रीशंकर प्राण बल्लभे ।
ज्ञान वैराग्य सिद्धयर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥

बोलो श्री जगदम्बे मात की जय ! अन्नपूर्णे मात की जय !
सच्चे दरबार की जय ! अटल छत्र की जय ! भगवती मात की जय !

श्री कालीजी की स्तुति

मंगल की सेवा सुण मेरी देवा, हाथ जोड़ थारे द्वार खड़े
पान सुपारी ध्वजा नारियल-पान सुपारी ध्वजा खोपरा,
ले ज्वाला थारी भेंट धरे ।
सुण जगदम्बे न कर विलम्बे, सन्तन के भण्डार भरे
संतन प्रतिपाली सदाखुशहाली मैया, जै काली कल्याण करे ॥

बुद्धि विधाता तू जग माता, मेरा कारज सिद्ध करे
चरन कमल का लिया आसरा - चरन कमल का लिया आसरा,
शरण तुम्हारी आनपरे ।
जब-जब भीर पड़े भक्तन पर, तब-तब आय सहाय करे
संतन प्रतिपाली सदाखुशहाली मैया, जै काली कल्याण करे ॥

बार बार ते सब जग मोह्यो, करुणी रूप अनूप धरे
माता होकर पुत्र खिलावै - माता होकर पुत्र खिलावै,
कहीं भार्या भोग करे ।
सन्तन सुखदाई सदा सहाई, सन्त खड़े जयकारकरे
संतन प्रतिपाली सदाखुशहाली मैया, जै काली कल्याण करे ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महेश देव सब, भेंट लिए थारे द्वार खड़े
अटल सिंहासन बैठी मेरी माता - अटल सिंहासन बैठी मेरी माता,
सिर सोने का छत्र फिरे ।
वार शनिश्चर कुमकुमवरणी, जब लुंकड़ पर हुकम करे
संतन प्रतिपाली सदाखुशहाली मैया, जै काली कल्याण करे ॥

खड्ग खप्पर त्रीशूल हाथ लिए, रक्तबीज को भस्म करे
शुम्भनिशुम्भ को क्षण ही में मारे - शुम्भनिशुम्भ को क्षण ही में मारे
महिषासुर को पकड़दले ।
आदितवार आदि की वीरा, जन अपने का कष्ट हरे
संतन प्रतिपाली सदाखुशहाली मैया, जै काली कल्याण करे ॥

कुपित होय कर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करे
जब तुम देखो दया रुप हो - जब तुम देखो दया रुप हो,
पल में संकट दूर टरे ।
सौम्य स्वभाव धरयो मेरीमाता, जिनकी अरज कबूलकरे
संतन प्रतिपाली सदाखुशहाली मैया, जै काली कल्याण करे ।।

सात बार की महिमा बरणी, सब गुण कौन बखान करे
सिंह पीठ पर चढी भवानी - सिंह पीठ पर चढी भवानी,
अचल भवन में राज करे ।
दर्शन पावें मंगल गावें, सिद्ध साधक थारी भेंट धरे
संतन प्रतिपाली सदाखुशहाली मैया, जै काली कल्याण करे ।।

ब्रह्मावेद पढ़े थारे द्वारे, शिव शंकर हरि ध्यान करे
इन्द्र कृष्ण थारी करे आरती - इन्द्र कृष्ण थारी करे आरती,
चवँरकुबेर डुलाय रहे ।
जय जननी जय मातभवानी, अचल भवन में राज करे
संतन प्रतिपाली सदाखुशहाली मैया, जै काली कल्याण करे ।।

।। श्री जगदम्बे मात की जय ।। श्रीजगदम्बार्पणमस्तु ।।

॥ आरती श्री शंकरजी की ॥

ॐ जय शिव ओंकारा, प्रभु भज शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्धाङ्गी धारा ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

एकानन चतुरानन, पञ्चानन राजे ।
हंसासन गरुड़ासन, वृषवाहन साजै ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

दोय भुज चार चतुर्भुज, दशभुज ते सोहै ।
तीनों रुप निरखता, त्रिभुवनजन मोहै ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

अक्षमाला वनमाला, रुण्डमाला धारी ।
चन्दन मृगमद चन्दा, भाले शुभकारी ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

श्वेताम्बर पीताम्बर,बाघम्बर अंगे ।
सनकादिक प्रभुतादिक, भूतादिक संगे ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

करमध्ये च कमण्डलु, चक्र त्रिशूल धरता ।
जगकर्त्ता जगहर्त्ता, जगपालन कर्त्ता ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर दौ मध्ये, ये तीनों एका ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

काशी मे विश्वनाथ विराजत, नन्दो ब्रह्मचारी ।
नित उठ भोग लगावत, महिमा अतिभारी ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

त्रिगुणा स्वामी की आरती, जो कोई नर गावै ।
भणत शिवानंद स्वामी, वांच्छितफल पावै ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

ॐ जय शिव ओंकारा, प्रभु भज शिव ओंकारा,
हो शिव गल में रुण्डमाला, हो शिव ओढत मृगछाला,
हो शिव पीते भंगप्याला, हो शिव रहते मतवाला,
हो शिव पार्वती प्यारा, हो शिव भूरी जटा वाला ॥
जटा में गंग विराजे, मस्तक में चंन्द्र विराजे, आसन कैलाशा ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

बोलो श्री शंकर भगवान की जय । बम् भोले नाथ की जय ।
उमा पति महादेव की जय ॥

सेवन्तिका वकुल चंपक पाटलाब्जै पुंन्नागजातिकरवीर रसाल पुष्पैः ।
विल्वप्रवाल तुलसी दल मालतीभिस्त्वाम् पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद ॥

भगवान शंकरजी की स्तुति

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम्
वन्दे पन्नग भूषणम् मृगधरं वंदे पशूनांपतिम् ।
वन्दे सूर्यशशांक वन्हिनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम्
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदम् वन्दे शिवं शंकरम् ।

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
संचारः पदयो प्रदक्षिणविधिः स्तोस्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ।

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो ।

शिव समान दाता नहीं और विपत विदारणहार ।
लज्जा सबकी राखियो बाबा बैलन के असवार ।

बोलो श्री शंकर भगवान की जय ! बम् भोले नाथ की जय !
उमा पति महादेव की जय ! हर हर हर महादेव ।

विशेष फल के लिए- भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए वर्ष में एक बार लघुरुद्र अथवा महारुद्र से रुद्राभिषेक करायें ।

(१) लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए मात्र गन्ने के रस से अभिषेक करें ।
(२) पुत्र प्राप्ति के लिए ताजा कच्चे दूध से अभिषेक करें ।
(३) रोगों का नाश करने के लिए कुशा (डाब) के जल से अभिषेक करें ।
(४) पत्नी अथवा पति की प्राप्ति के लिए मिश्री के जल से अभिषेक करें ।
(५) घर में शांति के लिए जल से अभिषेक करें ।

भगवान शिव और शक्ति की आराधना सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान करती है । माता-पिता, गुरू, देवता, ब्राह्मण, पति इनकी सेवा व सम्मान और परोपकार की भावना आत्मशांति प्रदान करते हैं जिससे स्वास्थ्य ठीक रहता है ।

॥ आरती श्री जगदीशजी की ॥

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥१॥
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनसे मनका ।
सुख-सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तनका ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥२॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहुँ मैं किसकी ।
तुमबिन और न दूजा,आस करूँ मैं किसकी ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥३॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥४॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भरता ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥५॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
किसविधमिलहुँ दयामय, तुमसे मैं कुमति ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥६॥
दीनबन्धु दुखहर्ता तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ उठाओं, द्वार खड़ा तेरे ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥७॥
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरों देवा ।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥८॥
तन मन धन जो है सब कुछ है तेरा ।
तेरा तुझको अर्पण क्या लागै मेरा ॥
ॐ जय जगदीश हरे ॥९॥
ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

॥ आरती राणीसतीजी की ॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्र हारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानि सहितं नमामि ॥

जय श्री राणी सती मैया, जय जगदम्ब सती ।
अपने भक्त जनों की दूर करें विपती ॥
ॐ जय श्री राणी सती ॥
अवनी अनन्तर ज्योति अखण्डित मंडित चहुँकुकुम्भा ।
दुरजन दलन खड़ग की, विद्युतसम प्रतिभा ॥
ॐ जय श्री राणी सती ॥
मरकत मणि मन्दिर अति मंजुल, शोभा लखि न परे ।
ललित ध्वजा चहुँ ओरे, कंचन कलश धरे ॥
ॐ जय श्री राणी सती ॥
घण्टा घनन घड़ावल बाजत, शंख मृदंग धुरे ।
किन्नर गायन करते, वेद ध्वनि उचरे ॥
ॐ जय श्री राणी सती ॥
सप्त मातृका करें आरती, सुरगण ध्यान धरे ।
विविध प्रकार के व्यञ्जन, श्री फल भेंट धरे ॥
ॐ जय श्री राणी सती ॥
संकट विकट विदारिणी, नाशनी हो कुमति ।
सेवकजनहृदि पटले, मृदुल करन सुमति ॥
ॐ जय श्री राणी सती ॥
अमल कमल दल लोचनी, मोचनी त्रय तापा ।
दास आयो शरण आपकी, लाज रखो माता ॥
ॐ जय श्री राणी सती ॥
श्री राणीसती मैयाजी की आरती जो कोई नर गावे ।
सदन सिद्धि नवनिधि, मनवांछित फल पावे ॥
ॐ जय श्री राणी सती ॥

॥ आरती श्रीलक्ष्मी जी की ॥

जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशदिन ध्यावत, हरविष्णु धाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

ब्रह्माणी रुद्राणी कमला, तू ही है जगमाता ।
सूर्य चंद्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥१॥

दुर्गा रुप निरन्जनी, सुख सम्पत्ति दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धिसिद्धि धनपाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥२॥

तू ही है पाताल बसन्ती, तू ही है शुभ दाता ।
कर्म प्रभाव-प्रकाशिनि, जगनिधि से त्राता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥३॥

जिस घर थारो वासो, वाही में गुण आता ।
कर न सके सोई करले, मन नहीं धड़कता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥४॥

तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न होय राता ।
खान पान को वैभव, तुम बिन कुण दाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥५॥

शुभ गुण सुन्दर युक्ता, क्षीर निधि जाता ।
रत्न चतुर्दश तोकूँ, कोई भी नहीं पाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥६॥

या आरती लक्ष्मीजी, की जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द अति उमंगे, पाप उतर जाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥७॥

स्थिर चर जगत बचावै, कर्म प्रेर ल्याता ।
राम प्रताप मैया की, शुभ दृष्टि चाहता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥८॥

ॐ जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशदिन ध्यावत, हरविष्णु धाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

श्री महामृत्युञ्जय मन्त्र (पौराणिक)

मृत्युञ्जय महादेव त्राहिमां शरणागतम् । जन्म मृत्यु जराव्याधि पीड़ितं कर्म बंधनैः ।
तावकस्त्वद्गतप्राण त्वच्चित्तोऽहं सदामृड । एवं विज्ञाप्य देवेशं भजेद्देवं तु त्रयंबकम् ।

ॐ भू र्भुवः स्वः श्री साम्ब सदा शिवायनमः

श्री शिवरामाष्टकम्

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शिव हरे शिव राम सखे प्रभो त्रिविधतापनिवारण हे विभो ।
अज जनेश्वर यादव पाहि मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ १॥
कमललोचन राम दयानिधे हर गुरो गजरक्षक गोपते ।
शिवतनो भव शंकर पाहि मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ २॥
स्वजनरंजन मंगलमंदिरं भजति तं पुरुषं परमं पदम् ।
भवति तस्य सुखं परमाद्भुतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ ३॥
जय युधिष्ठिरवल्लभ भूपते जय जयार्जितपुण्यपयोनिधे ।
जय कृपामय कृष्ण नमोऽस्तु ते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ ४॥
भवविमोचन माधव मापते सुकविमानसहंस शिवारते ।
जनकजारत राघव रक्ष मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ ५॥
अवनिमण्डलमङ्गल मापते जलदसुंदर राम रमापते ।
निगमकीर्तिगुणार्णव गोपते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ ६॥
पतितपावननाममयी लता तव यशो विमलं परिगीयते ।
तदपि माधव मां किमुपेक्षसे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ ७॥
अमरतापरदेव रमापते विजयतस्तव नाम धनोपमम् ।
मयि कथं करुणार्णव जायते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ ८॥
हनुमतः प्रिय चापकर प्रभो सुरसरिद्धृतशेखर हे गुरो ।
मम विभो किमुविस्मरणं कृतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥ ९॥
नरहरेति परं जनसुन्दरं पठति यः शिवरामकृतस्तवम् ।
विशति रामरमाचरणांबुजे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥१०॥
प्रातरुत्थाय यो भक्त्या पठेदेकाग्रमानसः ।
विजयो जायते तस्य विष्णुसान्निध्यमाप्नुयात् ॥११॥
॥ इति श्रीरामानंदविरचितं शिवरामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसांबसदाशिवार्पणमस्तु ।

॥ आरती श्री श्यामबाबाजी की ॥

ॐ जय श्री श्याम हरे, ओ बाबा जय श्री श्याम हरे ।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रुप धरे ॥ टेर ॥
रत्न जड़ित सिंहासन, सिर पर चवँर ढुरे ।
तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण परे ॥ १ ॥
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे ।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जरे ॥ २ ॥
मोदक खीर चुरमा, सुवरण थाल भरे ।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ॥ ४ ॥
झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरे ।
भक्त आरतीगावें, जय जय कार करे ॥ ५ ॥
जो ध्यावे फल पावे, सब दुख से उभरे ।
सेवकजन निजमुख से, श्री श्याम श्याम उच्चरे ॥ ६ ॥
श्री श्याम बिहारीजी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत आलुसिंह स्वामी, मनवांछितफल पावे ॥ ७ ॥
ॐ जय श्री श्याम हरे, ओ बाबा जय श्री श्याम हरे ।
निज भक्तों के तुमने, पूरण काम करे ॥ १ ॥

अथ महालक्ष्म्यष्टकम्

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ इन्द्र उवाच ॥

नमस्तेऽस्तुमहामाये श्रीपीठेसुरपूजिते । शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ १॥
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयंकरि । सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मिनमोऽस्तुते ॥ २॥
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वद्रुष्टभयंकरि । सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ३॥
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि । मन्त्रमूर्ते सदा देविमहालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ४॥
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ते महेश्वरि । योगजे योगसंभूते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ५॥
स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरि । महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ६॥
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि । परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ७॥
श्वेताम्बरधरे देवि नानालंकारभूषिते । जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ८॥
महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः ॥ सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोतिसर्वदा ॥ ९॥
एककाले पठेन्नित्यं माहापापविनाशनम् ॥ द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ॥१०॥
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् ॥ महालक्ष्मी भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥११॥

॥ इतीन्द्रकृतं महालक्ष्म्यष्टकं संपूर्णम् ॥

॥ श्रीगणपति-अथर्वशीर्षम् ॥

ॐ भद्रङ्कर्णेभिरिति शान्ति..

हरिः ॐ ॥ नमस्ते गणपतये । त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि ॥ त्वमेव केवलं कर्तासि । त्वमेव केवलं धर्तासि । त्वमेव केवलं हर्तासि । त्वमेव सर्व स्वल्विदं ब्रह्मासि ॥ त्वं साक्षादात्मासि नित्यम् । ऋतं वच्मि । सत्यं वच्मि । अव त्वं माम् । अव वक्तारम् । अव श्रोतारम् । अव दातारम् । अव धातारम् । अवानूचानमवशिष्यम् । अव पश्चातात् । अव पुरस्तात् । अवचोत्तरात्तात् । अव दक्षिणात्तात् । अव चोर्ध्वात्तात् । अवाधरात्तात् । सर्वतो मां पाहि पाहि समंतात् । त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः । त्वमानंदमयस्त्वं ब्रह्ममयः । त्वं सच्चिदानंदाद्वितीयोसि । त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि । सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते । सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति । सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति । सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति । त्वं भूमिरापोनलोनिलोनभः । त्वं चत्वारि वाक्पदानि । त्वं गुणत्रयातीतः । त्वं कालत्रयातीतः । त्वं देहत्रयातीतः । त्वं मूलाधारस्थितोऽसिनित्यम् । त्वं शक्तित्रयात्मकः । त्वां योगिनो ध्यायंति नित्यम् । त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चंद्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवःस्वरोम् । गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनंतरम् । अनुस्वारः परतरः । अर्धेंदुलसितम् ॥१॥ तारेण रूद्धम । एतत्तव मनुस्वरूपम् । गकारः पूर्वरूपम् । अकारो मध्यमरूपम् । अनुस्वारश्चान्त्यरूपम् । बिंदुरूत्तररूपम् । नादः संधानम् । संहिता संधिः । सैषा गणेशविद्या । गणक ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः । श्रीमहागणपतिर्देवता ॥ ॐ गम् । (गणपतये नमः।) एकदंताय विद्महे वक्रतुंडाय धीमहि । तन्नो दंती प्रचोदयात् । एकदंतं चतुर्हस्तं पाशमकुंशधारिणम् । अभयं वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम् ॥ रक्तं लंबोदरंशूर्पकर्णकं रक्तवाससम् । रक्तगंधानुलिप्तांगं रक्तपुष्पै सुपूजितम् ॥ भक्तानुकंपिनं देवं-जगत्कारणमच्युतम् । आविर्भुतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् ॥ एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः । नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रथमपतये नमस्तेऽ स्तु लंबोदरायैकदंताय

विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः ।। एतदथर्वशिरो योऽधीते सब्रह्मभूयाय कल्पते । स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते । स सर्वतः सुखमेधते । स पञ्चमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते । सायमधीयानो दिवसकृतंपापंनाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापंनाशयति । सायंप्रातः प्रयुंजानोऽपापो भवति । धर्मार्थकाममोक्षं च विंदति । इदमथर्वशीर्षम् शिष्याय न देयं । यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति ।। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत । अनेन गणपतिमभिषिंचति स वाग्मी भवति । चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति । स विद्यावान भवति । इत्यथर्वणवाक्यम् । ब्रह्माद्या चरणंविद्यात् । न बिभेति कदाचनेति । योदूर्वांकुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति । यो लाजैर्यजति स यशोवान्भवति । स मेधावान्भवति । यो मोदकसहस्रेणयजति स वांछितफलमवाप्नोति । यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते । अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति । सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासंनिधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति । महाविघ्नात् प्रमुच्यते । महापातात् प्रमुच्यते । महादोषात् प्रमुच्यते । स सर्वविद्भवति । स सर्वविद्भवति । य एवं वेद ।। ॐ भद्रंङ्कर्णेभिरिति शान्तिः ।।

।। इति श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम् ।।

श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मी जातवेदो म आ वह ॥१॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरूषानहम्
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥४॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥५॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥६॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१४॥

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरूशानहम् ॥१५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहूयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पश्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥
पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सं नि धत्स्व ॥१७॥
पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥१८॥
अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने ।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥१९॥
पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरी रथम् ।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥२०॥
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरूणो धनमश्विना ॥२१॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥२२॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तया श्रीसूक्तजापिनाम् ॥२३॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥२४॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमिं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥२५॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥२६॥
आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः
ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः ॥२७॥
ऋणरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः ।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥२८॥
श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥२९॥

॥ ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीहनुमते नमः ॥

श्रीहनुमान चालीसा

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मन मुकुरु सुधारि ।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुधि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुंचित केसा ॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
शंकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग बंदन ॥
बिद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचन्द्र के काज सँवारे ॥
लाय सजीवन लखन जियाये । श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना । लंकेस्वर भये सब जग जाना ॥

जुग सहस्त्र जोजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ।।
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।
राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रच्छक काहू को डर ना ।।
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक तें काँपै ।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ।।
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।।
सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ।।
और मनोरथ जो कोइ लावै । सोइ अमित जीवन फल पावै ।।
चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ।।
साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ।।
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ।।
तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ।।
अंत काल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ।।
और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ।।
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ।।
जै जै जै हनुमान गोसाई । कृपा करहु गुरु देव की नाईं ।।
जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महा सुख होई ।।
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रूप ।
राम लषन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ।।

।। इति ।।

॥ श्री राणी सतीजी चालीसा ॥

दोहा

श्रीगुरु पद पंकज नमन, दूषित भाव सुधार ।
राणीसती सुविमल यश, बरणौं मति अनुसार ॥
काम क्रोध मद लोभ में भरम रहा संसार ।
शरण गहि करूणा मई, सुख सम्पति संचार ॥

चौपाई

नमो नमो श्री सती भवानी । जग विख्यात सभी मनमानी ॥
नमो नमो संकट को हरनी । मनवाँछित पूरण सब करनी ॥
नमो नमो जय जय जगदम्बा । भक्तन काज न होय विलम्बा ॥
नमो नमो जय जय जगतारिणी । सेवक जन के काज सुधारिणी ॥
दिव्य रुप सिर चूनर सोहे । जगमगात कुण्डल मन मोहे ॥
मांग सिन्दूर सुकाजर टीको । गजमुक्ता नथ सुन्दर नीकी ॥
गल वैजयन्ती माल बिराजे । सोलहूँ साज बदन पे साजे ॥
धन्य भाग गुरसामल जी को । महम् डोकवा जन्म सती को ॥
तनधन दास पतिवर पाये । आनन्द मंगल होत सवाये ॥
जालीराम पुत्र वधु होके । वंस पवित्र किया कुल दोके ॥
पती देव रण मांय जुझारे । सती रूप हो शत्रु संहारे ॥
पति संग ले सद्गति पाई । सुर मन हर्ष सुमन बरसाई ॥
धन्य भाग उस राणाजी को । सुफल हुआ कर दरस सती को ॥
विक्रम तेरा सौ बावन कूं । मंगसिर वदि नौमी मंगल कूं ॥
नगर झुन्झुनू प्रगटी माता । जग विख्यात सुमंगल दाता ॥
दूर देश के यात्री आवें । धूप दीप नैवेद्य चढ़ावें ॥
उछाड़ उछाड़ते हैं आनन्द से । पूजा तन मन धन श्रीफल से ॥
जात जडूला रात जगावे । जन जन दादी सभी मनावे ॥

पूजन पाठ पठन द्विज करते । वेद ध्वनी मुखसे उच्चरते ॥
नाना भाँति भाँति पकवाना । प्रियजनों को नित्य जिमावा ॥
श्रद्धा भक्ति सहित हरसाते । सेवक मनवाँछित फल पावे ॥
जय-जयकार करे नर नारी । श्री राणीसती की बलिहारी ॥
सिंल द्वारा नित नौबत बाजै । होत सिंगार सात अति साजे ॥
रत्न सिंहासन झलके नीको । पल-पल छिन छिन ध्यान सती को ॥
भाद्र कृष्ण मावस दिन लीला । बरता मेला रंग रंगीला ॥
भक्त सुजन की सकड़ भीड़ है । दरसन के हित नहीं छीड़ है ॥
अटल भुवन में ज्योति तिहारी । तेज पुंज जग मां उजियारी ॥
आदि शक्ति में मिली ज्योत है । देश देश में भवन भौति है ।
नाना विधि सों पूजा करते । निशदिन ध्यान तिहारो धरते ॥
कष्ट निवारणी दुःख नासिनी । करुणामयी झुन्झुनू वासिनी ॥
प्रथम सती नारायणी नामां । द्वादस और हुई इसी धामा ॥
तिहूँ लोक में कीरति छाई । श्री राणी सती फिरी दुहाई ॥
सुबह शाम आरती उतारे । नोबत घन्टा ध्वनि टंकारे ॥
राग छतीसों बाजा बाजें । तेरह मंढ़ सुन्दर अति साजें ॥
त्राहि - त्राहि मैं शरण आपकी । पूरो मन की आस दास की ॥
मुझको एक भरोसो थारो । आन सुधारो कारज मेरो ॥
पूजन जप तप नेम न जानूं । निर्मल महिमा नित्य बखानूं ॥
भक्तन की आपति हर लेनी । पुत्र पौत्र सम्पति वर देनी ॥
पढे चालीसा जो सत बारा । होय सिद्ध मन मांहि बिचारा ॥
गोपीराम शरण ली थारी । क्षमा करो सब चूक हमारी ॥

॥ दोहा ॥

दुख आपद विपता हरण, जग जीवन आधार ।
बिगरी बात सुधारिये, सब अपराध बिसारि ॥

॥ पुष्पांजली ॥

चन्द्र तपै सूरज तपै, उदगन तपै आकाश ।
इन सबसे बढ़ कर तपै, सतियों का सुप्रकाश ॥
सेवा पूजा बन्दगी, सभी तुम्हारे हाथ ।
मै तो कुछ जानू नही तुम जानो मेरी मात ॥
जय जय श्री राणी सती, सत्य पुँज आधार ।
चरण कमल धरि ध्यान में, प्रणवहुं बारम्बार ॥
मेरा अपना कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोय ।
तेरा तुझको सौंप दूँ, क्या लागत है मोय ॥
मैया सब कुछ माँगल्यो, जो कुछ मेरे पास ।
दो नैना मत माँगियो, माँ थारे दरश की आश ॥
जगदम्बा जगतारिणी, राणी सती मेरी मात ।
भूल चूक सब माफ कर, शिर पर रखियो हाथ ॥
बैल चढ़े शंकर मिले, गरुड़ चढ़े भगवान ।
सिंह चढी दादी मिली, हो सबका कल्याण ॥
सुमन सुगन्धित सुमन ले सुमन सुबुद्धि सुधार ।
पुष्पाञ्जली अर्पित करुँ हे मात करो स्वीकार ॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥
यानि कानि च पापानी, जन्मान्तर कृतानि च ।
तानि सर्वाणि प्रणश्यन्ति, प्रदक्षिणा पदे पदे ॥
थार पसर पसर खांवा धोक, दादी म्हारी झुंझनू की ।
झुंझनू की ऐ माँ झुंझनू की, दादी म्हारी झुंझनू की ॥

॥ जय दादी की ॥